नए सत्र से विशेष विद्यार्थी बिना परीक्षा पा सकेंगे डिप्लोमा

जासं, लखनऊ : विशेष विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के डिप्लोमा कराने की तैयारी है। भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय ने विशेष बच्चों के लिए खास पहल की है। इसका प्रस्ताव अब कार्य परिषद की बैठक में रखा जाएग। नए सत्र से यह व्यवस्था की जा सकती है।

भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में नृत्य, गायन और वादन में डिग्री और डिप्लोमा के पाठ्यक्रम संचालित हैं। यहां सामान्य विद्यार्थियों के साथ ही शारीरिक अक्षम और कुछ विशेष विद्यार्थी भी अध्ययन कर रहे हैं। सामान्य और विशेष विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में बहुत अंतर आता है। विश्वविद्यालय के शिक्षक बताते हैं, विशेष विद्यार्थी परिणाम में पीछे रहते हैं तो उनमें तनाव बढ़ता है। परीक्षा में वे असहज न हों, इसलिए विश्वविद्यालय ने विशेष बच्चों के लिए संगीत को थेरेपी के रूप में प्रयोग करने की तैयारी की है।

प्रो. मांडवी सिंह

- **भातखंडे विश्वविद्यालय ने की पहल, विशेष बच्चों पर नहीं पड़ेगा परीक्षा का दबाव**

बीते दिनों परीक्षा के दौरान कुछ ऐसे बच्चों पर नजर पड़ी जो मानसिक कमजोर या आटिज्म जैसी बीमारी से पीड़ित हैं। परीक्षा कक्ष में वे विद्यार्थी असहज दिख रहे थे। इसके बाद इन विद्यार्थियों के लिए बिना परीक्षा के डिप्लोमा कराने का प्रस्ताव बनाने की तैयारी की गई। – **प्रो. मांडवी सिंह,** कुलपति, भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय

इसके तहत बिना परीक्षा के ही विद्यार्थियों को डिप्लोमा देने का विचार है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय में विशेष बच्चों के लिए विशेष डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी तैयार किए जाएंगे। अभी ऐसे 12 से 15 विद्यार्थी विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे हैं। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या आगे बढ़ भी सकती है। इसको दृष्टिगत रखते हुए प्रस्ताव को सक्षम समितियों के सामने रखा जाएगा, स्वीकृति के बाद इसे लागू किया जाएगा।

कला और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए किया समझौता

जासं ● लखनऊ : डिजाइन, कला और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए राज्य ललित कला अकादमी और बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान मिलकर काम करेंगे। इसके लिए दोनों संस्थानों ने अकादमी परिसर में समझौता किया। समझौता पत्र पर अकादमी की निदेशक डा. श्रद्धा शुक्ला व अध्यक्ष डिजाइन विभाग, बनस्थली विद्यापीठ जय वाई पटेल ने हस्ताक्षर किए। अकादमी में हुए इस समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान विविध शोध, कला शिविर, व्याख्यान एवं प्रदर्शन, सेमिनार, सम्मेलन, संगोष्ठियां, वास्तुकला विरासत, राष्ट्रीय विरासत, फर्नीचर डिजाइनिंग, कलाकृतियों की संरक्षण कार्यशाला, भारतीय पारंपरिक परिधान, फैशन प्रशिक्षण और प्लेसमेंट में परस्पर सहयोग करेंगे। एमओयू की अवधि पांच वर्ष होगी। अकादमी के कलाकार बनस्थली विद्यापीठ जा सकेंगे व बनस्थली विद्यापीठ के छात्र-छात्राएं अपने अध्ययन व ज्ञान को बढ़ाने हेतु अकादमी आ सकेंगे। इस मौके पर डिजाइन, आर्किटेक्चर एवं विजुअल आर्ट विभाग, बनस्थली विद्यापीठ से डा. आशिमा अरोड़ा, एसो. प्रो. ईशा भट्ट, सर्वेश मिश्र आदि उपस्थित रहे।